

डॉ. लेस्ली एलन, विलापगीत, सत्र 7, विलापगीत 3: 17-23

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 7, विलाप 3:17-23 है।

हमारे पिछले वीडियो में, हमने विलाप अध्याय 3 से शुरुआत की थी और हम श्लोक 16 तक पहुँचने में सफल रहे।

अब, मैं पद 17 से 24 की ओर बढ़ना चाहता हूँ। यह उसी बात का विस्तार है जिसके बारे में हम पहले बात कर रहे थे, लेकिन एक बहुत ही अलग दृष्टिकोण से। 1 से 16 तक, हमने गवाही, अपराध-संबंधी व्यक्तिगत प्रार्थना विलाप की रिपोर्ट कहा है।

फिर, मैंने संक्षेप में कहा कि 17 से 24 तक, हम उस विलाप और गुरु द्वारा सीखे गए सबक, विशेष रूप से आशा के सबक पर व्यक्तिगत चिंतन पाते हैं। केवल 1 से 16 तक की आयतों को गवाही कहना पूरी तरह से उचित नहीं है क्योंकि गवाही सख्ती से आगे बढ़ाई जाती है, और गुरु अभी भी अपने अनुभव के बारे में बोल रहा है। बेशक, वह वास्तव में मण्डली को संबोधित कर रहा है, हालाँकि वह उनका उल्लेख नहीं करेगा और उन्हें श्लोक 40 तक सीधे दृश्य में नहीं लाएगा। आइए हम अपने तरीकों का परीक्षण और जाँच करें।

लेकिन फिर भी, वह मण्डली को बहुत ध्यान में रखता है, और उन्हें उसकी बातों को ध्यान से सुनना चाहिए। हमने पिछली बार कहा था कि वे इस गवाही को सुनने में बहुत रुचि रखते, जिसमें संरक्षक के अपने पिछले व्यक्तिगत अनुभव को शामिल किया गया था, जो कि 586 में यरूशलेम के पतन के बाद हुई त्रासदी के बाद उनके द्वारा अनुभव किए गए समान आधारों पर था। हमने पहले कहा था कि गवाही में, हमें वास्तव में भूतकाल की आवश्यकता है क्योंकि संरक्षक एक पुराने अनुभव के बारे में बात कर रहा है जो वर्तमान के लिए प्रासंगिक है।

और इसलिए, यहाँ इन आयतों में, हमें वर्तमान काल के बजाय भूतकाल की आवश्यकता है, जैसा कि हमारे पास न्यू रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्जन और न्यू इंटरनेशनल वर्जन में है। और यहाँ इस नए खंड में, गुरु चिंतन कर रहे हैं। अपनी प्रार्थना विलाप के बाद, वह जो कुछ भी कहा था उसका पुनर्मूल्यांकन करना चाहते हैं।

वह जो पहले कह रहा था, उसके अनुसार यह केवल एक आंशिक कारक था। लेकिन वास्तव में, उसे सकारात्मक मानसिकता की आवश्यकता थी, और उसके अनुभव में यही हुआ। और वह इसे समझाने जा रहा है।

श्लोक 17 से 24 दो भागों में विभाजित हैं। यदि आप ध्यान से देखें, तो बहुत स्पष्ट रूप से, 17 से 20 नकारात्मक धारणाओं की बात करते हैं जो उनकी गवाही के बहुत अनुरूप थीं। और ये उनके शुरुआती विचार थे।

लेकिन फिर, श्लोक 21 से 24 तक, वह आश्चर्यजनक तरीके से सकारात्मक विश्वासों की ओर बढ़ने में सक्षम है। और इसलिए, पहले तो वह उन्हीं नकारात्मक बातों पर सोचता है, जिस पर उसका विलाप चल रहा था। लेकिन, वह अपने पिछले अनुभव में हुई हानियों की एक पूरी श्रृंखला का उल्लेख करता है।

और इसलिए, शांति की कमी। श्लोक 17, मेरी आत्मा शांति से वंचित थी। मैं भूल गया कि खुशी क्या है।

मैंने कहा कि मेरी महिमा और प्रभु से जो कुछ भी मैंने उम्मीद की थी, वह सब चला गया। और इसलिए, कोई शांति नहीं। यह पहला नुकसान था।

दूसरा नुकसान खुशी का न होना या, एनआईवी में, समृद्धि का न होना है। इसके अलावा भी बहुत कुछ है क्योंकि हिब्रू शब्द वास्तव में किसी अच्छी चीज़, अच्छे भाग्य के बारे में बोलता है। और इस विशेष शब्द का महत्व यह है कि वह अपनी सोच को उलटने जा रहा है।

जाहिर है, सौभाग्य ने उसे छोड़ दिया था। लेकिन बहुत जल्द, वह अन्य अच्छी चीज़ों के बारे में बात करने जा रहा है जो उसके जीवन में आ सकती हैं और जब उसने उस दुखद संकट के बारे में सोचा तो उसके अनुभव में आ गई। इसलिए, कोई शांति, शालोम, एक संतोषजनक जीवन की पूर्णता, कोई अच्छी चीज़, कोई सौभाग्य नहीं था।

और फिर, तीसरा नुकसान महिमा है, मेरी महिमा। या एनआईवी में, मेरा वैभव। खैर, इस हिब्रू शब्द का एक अर्थ जीवन प्रत्याशा है।

और मुझे लगता है कि यह बात यहाँ बिलकुल सटीक बैठती है। मेरी जीवन प्रत्याशा खत्म हो चुकी थी। भविष्य में मेरे जीवन की कोई संभावना नहीं थी।

और मेरे जीवन में अगला कदम, वास्तव में, मृत्यु होगी। और इसलिए, यह वह निराशाजनक निष्कर्ष है जो उसने निकाला। और फिर, अंत में, बहुत महत्वपूर्ण रूप से, वह सब खत्म हो गया जिसकी मुझे प्रभु से उम्मीद थी, उम्मीदें।

उसने अपनी आध्यात्मिक जीवन में अपनी उम्मीदें, अपनी सकारात्मक उम्मीदें खो दी थीं। ऐसा लग रहा था कि भगवान के साथ उसका रिश्ता खराब हो गया था, और वह दुख में अपना सिर हिला रहा था। उम्मीदों का यह मामला जो हमने पहले देखा है, किसी भी दुःख के अनुभव में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि नुकसान हमेशा उम्मीदों और संभावनाओं के नुकसान को दर्शाता है।

जीवन पहले जैसा नहीं रह जाएगा। और यहाँ, यह आयाम है कि भगवान ने उसे उम्मीदें दी थीं और अब वे खत्म हो गई हैं और आगे देखने के लिए कुछ भी नहीं है। और इसलिए, नकारात्मक धारणाओं की एक पूरी श्रृंखला है।

और वह श्लोक 19 और 20 में इसी दुख भरे अंदाज़ में आगे बढ़ता है। मेरी तकलीफ़ और बेघर होने का खयाल मेरे लिए कड़वा और कड़वा है। मेरी आत्मा लगातार इसके बारे में सोचती रहती है और मेरे भीतर झुक जाती है।

वह कुछ ऐसे शब्द उठाता है, जो वास्तव में हम विलाप की पुस्तक में पहले ही पढ़ चुके हैं। एनआईवी में, यह मेरा दुःख और मेरा भटकना है। और यह हमारे लिए एक घंटी बजा सकता है क्योंकि अध्याय 1 में, श्लोक 7 में, यरूशलेम के बारे में यही शब्द कहे गए थे।

जेरूसलम को अपने दुख और भटकने के दिन याद हैं। और वहाँ वापस, हमने सुझाव दिया कि यह बेचैनी का एक मनोवैज्ञानिक शब्द है, कि जब आप दुःख के समय में पीड़ित होते हैं, तो आप किसी भी चीज़ पर स्थिर नहीं हो सकते। आपका दिमाग एक बुरी चीज़ से दूसरी बुरी चीज़ पर भटकता रहता है और आप किसी एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने दिमाग में स्थिर नहीं होते हैं।

और दिलचस्प बात यह है कि ये वही शब्द हैं जो यरूशलेम में इस्तेमाल किए गए हैं। और इसलिए, गुरु कह रहे हैं, मैं अपने अनुभव में वहाँ गया हूँ। मेरा भी एक समानांतर अनुभव रहा है।

और यह निश्चित रूप से प्रासंगिक था, क्योंकि यरूशलेम, आंशिक रूप से, मण्डली के लिए खड़ा था, वह अवशेष जो यहूदा में पीछे रह गया था जबकि अन्य को बेबीलोन में निर्वासित कर दिया गया था। और वे कष्ट और भटकाव, बेचैनी से गुज़रे थे। और इसलिए, ये बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द हैं जो यहाँ सलाहकार द्वारा दोहराए जाते हैं क्योंकि वह अपने नकारात्मक विश्वासों के बारे में बात कर रहा है।

और वह कहता है कि यह नागदौना और पित्त है। ये उस आपदा के कारण होने वाले भावनात्मक संकट के रूपक हैं जिसमें वह शामिल था, वह संकट जिसमें वह शामिल था। उसने पहले भी इसका उल्लेख किया था, श्लोक 15 में अपनी विलापपूर्ण गवाही के अंत में।

उसने मुझे कड़वाहट से भर दिया है। उसने मुझे नागदौना से तृप्त कर दिया। और हम वहाँ देख रहे थे कि यह आर्टेमिसिया झाड़ी कड़वी थी।

लेकिन अब, वह इसे पित्त के साथ मिला देता है, जो वास्तव में एसिड रिफ्लक्स है जो पेट से गले में आता है। और ओह माय, यह एक कड़वा अनुभव है। यह गले को जला देता है।

और ये उस नकारात्मक अनुभव के रूपक हैं जो वह महसूस करता है, यह भावनात्मक संकट जो वह अपने दुख के परिणामस्वरूप महसूस करता है। और फिर, श्लोक 20 में, मेरी आत्मा लगातार इसके बारे में सोचती है और मेरे भीतर झुक जाती है। नकारात्मक विचारों की यह मनोरंजक, जुनूनी श्रृंखला है, और वह उनसे आगे नहीं बढ़ पाता है।

ऐसा लगता है कि यह बात हमेशा उसके दिमाग में रहती है। लेकिन उसे और भी बहुत कुछ कहना है। अब तक, मण्डली ने कहा, आमीन।

हाँ, आप उन चीज़ों के बारे में सोच रहे हैं और बात कर रहे हैं जिनके बारे में हम अपने अनुभव से जानते हैं। लेकिन वह आगे बढ़ता है। वह सकारात्मक क्षेत्र में जाता है, और वह श्लोक 22 में इसका परिचय देता है।

लेकिन मैं इसे ध्यान में रखता हूँ, और इसलिए, मुझे आशा है। और वह इस शब्द को लाता है, आशा। अब तक, हम वास्तव में निराशा, संकट के संदर्भ में सोच रहे हैं, जिसका एक हिस्सा निराशा है।

लेकिन अब वह उम्मीद की बात करने की हिम्मत कर सकता है, मण्डली के लिए नहीं, बल्कि अपने अनुभव में खुद के लिए। और यह, कम से कम, दिलचस्प है और ऐसा कुछ है जिसे मण्डली करने के लिए तैयार होगी। ठीक है, यह आपका अनुभव था। हमें इसके बारे में थोड़ा और बताइए।

और नए RSV में, आयत 21 के अंत में एक कोलन है। तो, यह वास्तव में आगे की ओर इशारा कर रहा है, और NIV भी ऐसा ही करता है। यह आगे की ओर इशारा कर रहा है।

और वह यह बताने जा रहा है कि इस आशा में क्या शामिल है। और इसलिए, वह अपने पाठकों को तैयार कर रहा है, और वह अपने घावों से आगे बढ़कर उपचार की ओर बढ़ रहा है। और एक बदलाव हुआ, परिस्थितियों में बदलाव नहीं।

संकट अभी भी था। ऐसा नहीं था कि सब कुछ ठीक हो गया, सूरज निकल आया और सब कुछ ठीक हो गया। नहीं, वह उसी दयनीय स्थिति में था, लेकिन उसका रवैया बदल गया।

और जैसा कि मैंने कहा, ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उनकी बाहरी परिस्थितियों में कोई बदलाव आया है। संकट अभी भी खत्म नहीं हुआ है। लेकिन वह अपने व्यक्तिगत रवैये में आगे बढ़ सकते हैं, और अपने मन और दिल में जीत हासिल कर सकते हैं।

और इसलिए, वह अपने वर्तमान संकट पर निराशा के बजाय भविष्य के लिए आशा के बारे में सोच सकता है, जो विलाप की गवाही के सभी पिछले भागों का प्रतीक था। वह नकारात्मकता से परे जा सकता है, और वह किसी और चीज़ पर आगे बढ़ सकता है। वह अपने वर्तमान दुख के दायरे से बाहर सोच सकता है।

तो, यह क्या है, यह आशा क्या है? उसे मण्डली का बहुत ज़्यादा ध्यान है। यह कैसे हो सकता है? यह अविश्वसनीय है। इसका कोई मतलब नहीं है।

और सबसे पहले, वह धर्मशास्त्रीय रूप से सोचता है। और वह कहता है, प्रभु का दृढ़ प्रेम कभी समाप्त नहीं होता। उसकी दया कभी समाप्त नहीं होती।

वे हर सुबह नए होते हैं। तेरी वफ़ादारी महान है। वह किस बारे में बात कर रहा है? यह कैसे हो सकता है? खैर, अब, इस पहले खंड के बारे में कहने के लिए कई बातें हैं: प्रभु का दृढ़ प्रेम कभी समाप्त नहीं होता।

जब हमने उस गवाही को देखा, तो हमने कहा कि यह एक विलाप की रिपोर्ट थी। यह वास्तविक विलाप नहीं था, लेकिन इसे बाद में रिपोर्ट किया जा रहा था। यह वास्तव में एक वास्तविक विलाप से मेल नहीं खाता था।

कुछ छूट गया था, और वह था विश्वास की पुष्टि। अक्सर, प्रार्थना में विलाप करते समय, जो संकट की बात करते हैं, विश्वास की पुष्टि होती है, जो इस स्थिति में ईश्वर पर भरोसा करने की बात करती है। मैं एक आस्तिक हूँ।

मेरा मानना है कि आप मुझे इस स्थिति से बाहर निकाल सकते हैं। और गुरु ने जो किया है वह है उस सकारात्मक तत्व को अलग करना, उम्मीद है कि अगर भगवान चाहे तो एक उज्ज्वल भविष्य की ओर देख रहे हैं। वह इसे अलग से रखता है, और ये सकारात्मक विश्वास बोलने की पूरी नकारात्मक बौछार के बाद रखे जाते हैं।

पद 4 में है, अपने सेवक की आत्मा को आनन्दित कर, क्योंकि हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा को तेरी ओर लगाता हूँ। यह एक व्यक्तिगत विलाप है। भजन 86 के पद 5 में आगे कहा गया है, क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है, और जितने तुझे पुकारते हैं, उन सभी के प्रति तू अत्यन्त करुणामय है।

परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर सकारात्मक तरीके से देता है, इसलिए कृपया मेरी प्रार्थना का उत्तर दें और मुझे अपने दृढ़ प्रेम का कुछ अंश दिखाएँ। तो, यहाँ हमारे पास विश्वास की पुष्टि है, क्योंकि आप अच्छे और क्षमाशील हैं, दृढ़ प्रेम में भरपूर हैं। और हमारे पास भजन 130 और पद 7 में एक और उदाहरण है, हे इस्राएल, प्रभु पर आशा रख।

यह एक व्यक्तिगत विलाप के अंत में आता है, और मण्डली को शामिल करने के लिए एक आंदोलन है। हे इस्राएल, प्रभु पर भरोसा रखो, क्योंकि प्रभु के साथ दृढ़ प्रेम है। उसके साथ, मुक्ति की महान शक्ति है।

यह वही है जो इस्राएल को उसके सभी अधर्मों से छुड़ाएगा। विश्वास की पुष्टि में एक सकारात्मक भविष्य की आशा करना। और कभी-कभी, इसे एक प्रार्थनापूर्ण याचिका का हिस्सा बनाया जाता है जिसे भजनकार भजन 25 और श्लोक 7 में लाता है। मेरी जवानी के पापों या मेरे अपराधों को याद मत करो।

, अपनी करुणा के अनुसार अपनी भलाई के कारण मुझे स्मरण कर। और यहाँ, जैसा कि पहले के दो भजनों में से एक में है, हमें करुणा और भलाई का मिश्रण मिलता है। और यही वह है जो हम विलापगीत अध्याय 3 में अंततः पाएंगे। और फिर भजन 51 और पद 1 में, हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर।

अपनी अटल करुणा और अपनी असीम दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। और इसलिए, परमेश्वर से की गई प्रार्थना में, परमेश्वर से सकारात्मक तरीके से हस्तक्षेप करने और

चीजों को बदलने की अपील की गई है। और इसलिए विश्वास और प्रार्थनाओं की ये पुष्टियाँ हैं जो परमेश्वर के अटल प्रेम का संदर्भ देती हैं।

और यहाँ, यह इस रिपोर्ट में है, इस निरंतर रिपोर्ट में, गुरु के पिछले अनुभव के बारे में। इसे जानबूझकर व्यक्तिगत चिंतन में अलग से रखा गया है ताकि नकारात्मक प्रतिक्रियाओं और सकारात्मक दृष्टिकोणों के बीच अंतर को इंगित किया जा सके। और एक आंदोलन, उसका अपना आंदोलन, गुरु का नकारात्मकता से परे अपना आंदोलन। पद 22 की इस पहली पंक्ति में एक पाठ्य समस्या है।

दूसरी ओर, एनआईवी हमारे वर्तमान हिब्रू पाठ से बहुत अधिक जुड़ा हुआ है। और इसमें क्या है? यह कहता है कि प्रभु के महान प्रेम के कारण, हम नष्ट नहीं हुए हैं। प्रभु के महान प्रेम के कारण, हम नष्ट नहीं हुए हैं।

और यही बात हिब्रू पाठ में कही गई है। और यह किंग जेम्स संस्करण से भी जुड़ा है। और अगर आप किंग जेम्स संस्करण को देखें, तो आप पाएंगे कि इसमें इटैलिक में ऐसे शब्द लिखने की प्रथा है जो हिब्रू में नहीं हैं, लेकिन आपको पाठ को समझने के लिए उन्हें लिखना होगा।

किंग जेम्स संस्करण में, इस वजह से, इसे इटैलिक में रखा गया है। यह वहाँ नहीं है। इसलिए, यहाँ हमारे पास बहुत ही असंगत कथन है।

दृढ़ प्रेम, और फिर हम भस्म नहीं होते। तो यह एक समस्या है। दूसरी समस्या यह है कि अचानक हम पर स्विच हो जाना।

वह आगे की आयत 40 तक हम और हमारे बारे में बात नहीं करने जा रहा है। और यह उसके व्यक्तिगत अनुभव का एक कारक है और मण्डली का इसमें कोई हिस्सा नहीं है।

और इसलिए, हम फिर से पाठ्य प्रमाणों को देखते हैं। वास्तव में, दो प्राचीन संस्करण हैं जो इसे अलग-अलग तरीके से प्रस्तुत करते हैं, जैसे कि यह पहली पंक्ति। और यह कहता है, प्रभु का दृढ़ प्रेम कभी समाप्त नहीं होता।

और यह बात अगली आधी लाइन से बहुत मेल खाती है। उसके जनसमूह कभी खत्म नहीं होते। और मुझे लगता है कि वास्तव में यही तरीका है। ठीक है।

यह वास्तव में बहुवचन है। हिब्रू में दृढ़ प्रेम वास्तव में बहुवचन है। और आपको यह अमूर्त संज्ञा मिली है, दृढ़ प्रेम।

बहुवचन में इसका क्या अर्थ है? खैर, इसका अर्थ है दृढ़ प्रेम के कार्य। और मुझे लगता है कि यह यहाँ एक कारण से बहुत, बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है, मुझे कहना चाहिए। दृढ़ प्रेम, ईश्वर के लिए एक महत्वपूर्ण सकारात्मक धार्मिक शब्द का NRSV संस्करण, ईश्वर की प्रकृति।

दृढ़ प्रेम, यह एक वाचा प्रेम है। कुछ लोग इसे प्रतिबद्धता कहते हैं, परमेश्वर की अपने लोगों, इस्राएल के प्रति प्रतिबद्धता। और हम यहाँ धर्मशास्त्र के क्षेत्र में आ रहे हैं।

एनआईवी में महान प्रेम है, जो कि उचित है क्योंकि हिब्रू में अमूर्त संज्ञा का बहुवचन तीव्रता को इंगित कर सकता है। और इसलिए महान प्रेम। अपने आप में, इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

हालाँकि, मैं इससे पूरी तरह से खुश नहीं हूँ, क्योंकि इसमें बहुवचन का उपयोग किया गया है। उसकी दया कभी खत्म नहीं होती। दया, यह किंग जेम्स संस्करण शब्द को उठाता है, वास्तव में करुणा है। और बहुवचन में, करुणा के कार्य।

एनआईवी वास्तव में कहता है कि उसकी करुणा कभी विफल नहीं होती। और मुझे नहीं पता कि इस शब्द का बहुवचन है, अमूर्त शब्द करुणा। तो, यह उसकी करुणा के कार्य हैं।

और ये बहुवचन बहुत ज़्यादा उठाए गए हैं, और ये कभी नहीं रुकते। यहाँ दृढ़ प्रेम का एक कार्य है, यहाँ करुणा का एक कार्य है, यहाँ दृढ़ प्रेम का एक और कार्य है, करुणा का एक और कार्य है। और इसलिए, प्रभु के दृढ़ प्रेम के कार्य कभी नहीं रुकते।

उनकी करुणा के कार्य कभी समाप्त नहीं होते। खैर, यह एक धार्मिक कथन है, लेकिन हमें आश्चर्य है कि इसका क्या मतलब है। लेकिन निश्चित रूप से, गुरु को राहत मिली, और उन्होंने इस धार्मिक कारक के बारे में सोचकर आशीर्वाद पाया, जैसा कि वास्तव में कई भजन करते हैं।

और वह इसे अपने नकारात्मक अतीत से परे भविष्य के संदर्भ में व्याख्या करता है। वह नकारात्मक अतीत उसकी राह का अंत नहीं है, लेकिन उससे परे, कुछ सकारात्मक है। और वह बहुत सोचता है कि परमेश्वर के दृढ़ प्रेम के बारे में एक स्थायित्व है।

भगवान की करुणा में स्थायित्व है। वह भगवान के क्रोध से पीड़ित था, लेकिन उसने अध्याय तीन की पहली आयत में कहा, लेकिन वास्तव में, हमने पहले के वीडियो में क्रोध और गुस्से शब्द को देखा था। और हमने देखा कि यह भगवान की प्रकृति का हिस्सा नहीं है।

यह मानवीय गलत कामों की प्रतिक्रिया है। अगर कोई मानवीय गलत काम नहीं है, तो भगवान के मामले में कोई गुस्सा नहीं है। यह एक प्रतिक्रिया है, लेकिन यह भगवान की स्थायी प्रकृति का हिस्सा नहीं है।

और इसलिए यहाँ, हाल ही में, गुरु इन गुणों की स्थायित्व के बारे में बात करते हैं। अभी के लिए, उन्होंने भगवान के क्रोध का अनुभव किया है। वास्तव में, वह अब इस संकट में है क्योंकि यह एक अपराध-संबंधी समस्या है जिसका वह अनुभव कर रहा है।

लेकिन इसके विपरीत, ईश्वर के इन महान गुणों, दृढ़ प्रेम और करुणा की स्थायित्व है। और इसलिए, अहा, एक संभावना है कि वे वापस आएँगे, और ईश्वर के उस क्रोध की एक सीमा होगी, और यह इन नियमित गुणों के विपरीत हमेशा के लिए नहीं रहेगा। वह आगे कहते हैं कि वे हर सुबह नए होते हैं।

वे हर सुबह नए होते हैं। और यहाँ, वह अपने अनुभव के बारे में बात कर रहा है, कि श्लोक 22 उसके अपने जीवन में सच साबित हुआ है। और शायद एक मण्डली आश्चर्य से देखती है।

खैर, तुम एक बुरे दौर से गुज़रने की बात कर रहे हो। यह कैसे सच हो सकता है? मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह कैसे सच रहा है। मैं अभी भी ज़िंदा हूँ।

मैं एक उत्तरजीवी हूँ। मैं एक उत्तरजीवी हूँ। अब, उसने हमेशा इस तरह से नहीं सोचा था।

पद 6 में, परमेश्वर ने मुझे बहुत पहले के मृतकों की तरह अंधकार में बैठा दिया। उसने खुद को मरा हुआ समझा। और अगला कदम उसके लिए एक वास्तविक अंतिम संस्कार होगा क्योंकि जीवन के मामले में उसके पास कोई संभावना नहीं थी।

लेकिन अब, वह फिर से सोचता है, मैं वास्तव में मरा नहीं हूँ। मैं जीवित हूँ। और इसमें बहुत महत्व हो सकता है।

भगवान ने मुझे बचा लिया है। भगवान ने मुझे अपने क्रोध में नहीं मारा है। मैं यहाँ हूँ, जीवित हूँ।

और यह बात महत्वपूर्ण लगती है। मैं अभी भी हर सुबह जागता हूँ। मैं अभी भी जीवित हूँ।

और मैं यहाँ ईश्वर की कृपा को देखता हूँ। और वह अपने बचने को ईश्वर के उपहार से कम नहीं मानता। और यहाँ, हमें कुछ ऐसा ध्यान में रखना होगा जिसका हमने पहले उल्लेख नहीं किया है।

वह शब्द दृढ़ प्रेम, इसके कई अर्थ हैं। और कभी-कभी, वास्तव में, बहुत बार, यह परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह को संदर्भित करता है। हाँ।

लेकिन फिर कभी-कभी, यह परमेश्वर की कृपा को बनाए रखने को संदर्भित करता है। और कभी-कभी, जीवन को सुरक्षित रखने में परमेश्वर की कृपा को बनाए रखना। उदाहरण के लिए, भजन 119 और श्लोक 159 में, हम वहाँ क्या पढ़ते हैं? अपनी दृढ़ करुणा के अनुसार मेरे जीवन की रक्षा कर।

अपनी करुणा के अनुसार मेरे प्राण की रक्षा कर। और परमेश्वर ने उसके प्राण की रक्षा की थी। हे परमेश्वर, वह आधा मरा हुआ था, परन्तु आधा जीवित था।

वह आधा जीवित था। उसका प्याला आधा खाली था, लेकिन इसका मतलब था कि वह आधा भरा हुआ था। और इसलिए, वह यहाँ उजले पक्ष को देखने में सक्षम है।

वे हर सुबह नए होते हैं। मैं एक उत्तरजीवी हूँ। और वह इसे गंभीरता से लेता है।

और वह इसे पद 39 में मण्डली पर लागू करने जा रहा है। हम सभी अभी भी बचे हुए हैं। आप भी बचे हुए हैं, और मैं भी।

यह भयानक आपदा। युद्ध में, घेराबंदी में, और इसी तरह, कब्जे में इतने सारे लोग मारे गए। इतने सारे लोग मारे गए हैं।

भुखमरी और विभिन्न कारणों से हमारे साथियों की मृत्यु हुई है। लेकिन हम जीवित हैं। और इसलिए, वह पद 39 में कहता है, जो कोई साँस लेता है, उसे अपने पापों की सज़ा के बारे में शिकायत क्यों करनी चाहिए? एनआईवी कुछ ऐसा ही कहता है, लेकिन शायद इसे समझना आसान है।

यह कहाँ था? यह श्लोक 39 है। जीवित लोगों को अपने पापों के लिए दंडित होने पर शिकायत क्यों करनी चाहिए? यदि वे अभी भी जीवित हैं, तो यह जश्न मनाने की बात है। और इसलिए, वह इसे वहाँ की मण्डली पर लागू करता है।

यह उनके अपने अनुभव में उनके अपने दृढ़ विश्वास का अनुप्रयोग है। मैं जीवित हूँ, और मुझे लगता है कि मुझे जीवित रखने में भगवान का एक उद्देश्य है, और मेरे लिए एक भविष्य है। और इसलिए, यह आशा का आधार है।

उसे यह कहां से मिला? यह कहां से आया? यह सब धार्मिक, सकारात्मक धार्मिक शब्दों का ढेर था। खैर, विद्वान सहमत हैं, यह निर्गमन अध्याय 34 और श्लोक 6 में वापस आता है, जहां मूसा को ईश्वर का रहस्योद्घाटन दिया गया है। ईश्वर उसके सामने से गुजरता है, और ईश्वर घोषणा करता है, प्रभु, प्रभु, एक दयालु और अनुग्रहकारी ईश्वर, क्रोध में धीमा, और दृढ़ प्रेम और विश्वासयोग्यता में प्रचुर।

हज़ारवीं पीढ़ी तक अटल प्रेम रखना, अधर्म, अपराध और पाप को क्षमा करना। और पद 22 में इस्तेमाल की जा रही सारी शब्दावली सीधे निर्गमन 34 और पद 6 से ली गई है। अटल प्रेम, दया, दयालु, यह वहाँ एक विशेषण है, निर्गमन में वापस, और वफ़ादारी। यह सब वहाँ है, शब्दों का वही समूह।

दृढ़ प्रेम, दयालुता, वफ़ादारी। और इसलिए, यह है। और हमें इस बात से बहुत अवगत होना चाहिए कि जब कोई शास्त्र उद्धृत किया जाता है, तो हम यहाँ अंतरपाठ्यता रखते हैं।

लेकिन जब किसी पाठ को उद्धृत किया जाता है, तो उम्मीद है कि न केवल पाठ का संदर्भ होता है, बल्कि संदर्भ का भी संदर्भ होता है। और निर्गमन 34 का संदर्भ क्या है? यह निर्गमन 32 के बाद आता है। और वह सोने के बछड़े का भयानक पाप था।

इस्राएल ने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया और उसके स्थान पर सोने के बछड़े की पूजा करने लगा। और इसलिए, कोई सोच सकता है, ठीक है, यह सब कुछ का अंत है। और यहाँ तक कि परमेश्वर भी इस तरह से सोचने की हिम्मत करता है।

ओह, कृपया, कृपया। मुझे पता है कि यह भयानक है, लेकिन कृपया उन्हें एक और मौका दें। और भगवान निर्गमन 34 में कहते हैं, ठीक है, मैं करूँगा।

और मैं उन्हें अपने दृढ़ प्रेम, करुणा और वफ़ादारी के और भी उदाहरण दिखाऊँगा। और इसलिए, निर्गमन 34 और पद 6 बहुत प्रासंगिक हैं क्योंकि, मण्डली के अनुभव में, यह अपराधबोध ही था जो उस सज़ा के पीछे था जिसके कारण 586 ईसा पूर्व में यह सज़ा हुई। जैसा कि निर्वासन से पहले के भविष्यवक्ताओं ने कहा है, जैसा कि व्यवस्थाविवरण 28 में बताया गया है, यह सब पहले ही अभिव्यक्तियों में समझाया जा चुका है, वह अपराधबोध कारक।

और अध्याय 3 में पहले गुरु की गवाही परमेश्वर के इस क्रोध से संबंधित अपराध थी जो उसके मामले में मानव पाप को दंडित कर रहा था। लेकिन हम यहाँ हैं। निर्गमन 34 और श्लोक 6 के शास्त्र में यह महान मिसाल है। सब कुछ खो नहीं गया है।

सोने के बछड़े की पूजा करने के बाद इस्राएल के लिए एक भविष्य था। और इसलिए, मण्डली के लिए भी एक भविष्य हो सकता है। और निश्चित रूप से, अपने स्वयं के अनुभव में, उन्होंने इसे अपने आप में समझा और इस पुराने पाठ को अपने लिए प्रासंगिक मानते हुए उसका जश्न मनाना चाहते हैं।

हमने श्लोक 22 से 23 में सर्वनामों के परिवर्तन पर ध्यान नहीं दिया है। यह तीसरे व्यक्ति में प्रभु, याहवे के बारे में बात कर रहा है। उसकी दया कभी खत्म नहीं होती।

लेकिन फिर, आपकी वफ़ादारी महान है। अचानक एक बदलाव होता है। अचानक ईश्वर की ओर मुड़ना होता है।

और वह प्रार्थना करने आता है। वह पहले कभी प्रार्थना नहीं करता था। यहाँ तक कि उसका विलाप भी उसके अपने अनुभव में, उसके अपने नकारात्मक अनुभव में ईश्वर के बारे में तीसरे व्यक्ति की रिपोर्ट थी।

लेकिन अब, यह बदलाव है। और थोड़ी देर बाद, मैं इसके महत्व के बारे में सोचना चाहता हूँ। लेकिन ऐसा करने से पहले, शायद मेरी बात सुन रहे ईसाइयों को लगा होगा कि वे उस आयत से बहुत परिचित हैं, आयत का वह हिस्सा, आपकी वफ़ादारी महान है।

क्योंकि इसे अक्सर एक भजन में गाया जाता है, महान है तेरी वफ़ादारी। यह एक भजन है जो 1920 के दशक में रचा गया था।

और यह एक सुंदर भजन है, खूबसूरती से लिखा गया है। और इसमें एक सुंदर, जोरदार धुन है। और मण्डली इसे जोश से गाती है।

मुझे कहना ही पड़ेगा, मुझे वह भजन पसंद नहीं है। और ऐसा कहना शायद लगभग विधर्मी लग सकता है। तो, मेरा क्या मतलब है, मुझे वह भजन क्यों पसंद नहीं है? मुझे लगता है कि यह यहाँ पाठ का बहुत दुरुपयोग है।

यह पाठ का बहुत ज़्यादा दुरुपयोग है। और मैं भजन संहिता में वाल्टर ब्रूगेमैन द्वारा की गई खोज का उल्लेख करना चाहता हूँ कि भजन संहिता में जीवन की विभिन्न स्थितियों का वर्णन है। और जीवन की तीन स्थितियाँ हैं, और आपको इसके बारे में पता होना चाहिए।

इसलिए, अगर हम भजन पर उपदेश दे रहे हैं, तो हमें पूछना होगा कि जीवन की सेटिंग क्या है? यहाँ किस तरह की जीवन स्थिति का अनुमान लगाया गया है? ब्रूगेमैन ने सुझाव दिया कि तीन जीवन सेटिंग हैं जो भजनों को एक दूसरे से अलग करती हैं। और पहला है अभिविन्यास, जहाँ जीवन बहुत अच्छा है। जीवन बहुत अच्छा है, और शिकायत करने के लिए बहुत कुछ नहीं है।

हमेशा कुछ छोटी-छोटी चीजें गलत होती रहती हैं, लेकिन जीवन बहुत अच्छा है। दिशा-निर्देश। और हम ऐसी स्थितियों में भगवान के आशीर्वाद का जश्न मनाते हैं।

और हम प्रशंसा के गीत गाते हैं। और वे सभी अभिविन्यास के मौसम को पूर्व निर्धारित करते हैं। लेकिन फिर, लगभग आधे भजन उस स्थिति में नहीं हैं।

लेकिन वे भटकाव में पड़ गए हैं, संकट ने व्यक्तिगत जीवन या समुदाय के जीवन पर आक्रमण कर दिया है। और 150 भजनों में से 65 भटकाव से संबंधित हैं। और, ओह माय, यह काफी अलग है।

और अब आप आशीर्वाद के बारे में इतना नहीं सोचते। आप मुक्ति चाहते हैं। आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपको इस संकट से बचाए।

और ये भजनों में वे नाम हैं जिन्हें हम अक्सर नहीं पढ़ते हैं, कि वे इस मुक्ति, इस बचाव, संकट से मुक्ति की तलाश कर रहे हैं, जो उनके जीवन में भटकाव के रूप में आक्रमण करता है। और फिर ब्रूगेमैन ने कहा कि पुनर्निर्देशन है। इसके बाद, भटकाव हमेशा के लिए नहीं रहता है, लेकिन यह पुनर्निर्देशन का रास्ता देता है।

और शायद यह धन्यवाद भजनों में विशेष रूप से सच है, जहाँ प्रार्थना करने वाला व्यक्ति या प्रार्थना करने वाला समूह, परमेश्वर के पास वापस आता है और कहता है, आह, आपने मुझे बचा लिया। धन्यवाद, परमेश्वर। और वे धन्यवाद भेंट लाते हैं और परमेश्वर को धन्यवाद कहते हुए पशु बलि चढ़ाते हैं।

खैर, अब हम जीवन और विलाप के इन मौसमों में कहाँ हैं? हम अच्छी तरह जानते हैं कि हम भटकाव के मौसम में हैं। जीवन बहुत गंभीर है और संकट के अनुभव से बाहर है, विलाप से बाहर है कि पाठ वहाँ बोल रहा है। लेकिन उस भजन ने मौसम बदल दिया है, और यह अभिविन्यास के मौसम के बजाय सोचता है।

सब कुछ अच्छा है। जीवन आशीर्वादों से भरा है। और इसलिए, यह कहता है, गर्मी और सर्दी, वसंत और फसल, सूर्य, चंद्रमा और तारे अपने ऊपर के मार्गों में, आपकी महान वफादारी, दया और प्रेम के लिए कई गुना गवाही में सभी प्रकृति के साथ जुड़ते हैं।

और तेरी वफ़ादारी इतनी महान है। हर सुबह, मैं नई दया देखता हूँ। मुझे जो कुछ भी चाहिए था, तेरे हाथ ने उसे पूरा किया है।

स्थायी शांति। खुशियाँ देने और मार्गदर्शन करने के लिए आपकी अपनी प्रिय उपस्थिति।

आज के लिए शक्ति और कल के लिए उज्ज्वल आशा। मेरे सभी आशीर्वाद और दस हज़ार आशीर्वाद। यह आशीर्वाद के संदर्भ में है।

यह अभिविन्यास के संदर्भ में है, और यह उस पाठ का पूरी तरह से दुरुपयोग करता है। यह विलाप की स्थिति को दूर करता है।

और शायद यह हमारी पूजा की एक विशेषता है कि हम ऐसा करते हैं। यह सब उत्सव है, जबकि उस मण्डली में, ऐसे कई लोग हो सकते हैं जो वास्तव में अंदर से पीड़ित हैं, और उनके दुख को पहचानने और स्वीकार करने और भगवान के सामने लाने की आवश्यकता है। और इसलिए हम वहाँ हैं।

यह स्थानांतरण है। और इसलिए, अगर मैं सेवा ले रहा होता, तो मैं कभी भी महान है तेरी वफ़ादारी का चयन नहीं करता क्योंकि मैं निराश महसूस करता हूँ। यह एक पाठ का उपयोग कर रहा है लेकिन संदर्भ को अनदेखा कर रहा है।

और यह बहुत भयानक बात है। इसने विलाप से छुटकारा दिलाया है। इसने संकट से छुटकारा दिलाया है।

इससे भटकाव दूर हो गया है। इसलिए, हमें सावधान रहने की जरूरत है। लेकिन हम सर्वनामों के इस बदलाव, आपकी वफ़ादारी के बारे में सोचना जारी रखेंगे।

खैर, आइए अब 22 और 23 के इन दो छंदों की समीक्षा करें। यह एक समृद्ध अंश है। यह उनका दूसरा विचार है।

उन शुरुआती गंभीर विचारों के बाद, विलाप की आवाज़ों के साथ आगे बढ़ना जारी है, जिसने संकट से परे भविष्य के लिए जगह पाई है, उम्मीद है कि भगवान के दृढ़ प्रेम और भगवान की करुणा और भगवान की वफ़ादारी के संदर्भ में। और इसलिए, वह फिर से उस नकारात्मकता को देखता है, और अब वह भगवान के समग्र उद्देश्यों को देखता है, जो अच्छे के लिए हैं। और वह पद 25, 26 और 27 में अच्छा शब्द का उपयोग करने का साहस करने जा रहा है।

उसके रवैये में बदलाव आया है, उसे अहसास हुआ है कि वह जीवित बचे लोगों में से एक है, और वास्तव में, वह एक निर्णायक मोड़ पर आ गया है।

जब हम ग्रीक प्रक्रिया और प्रक्रियाओं की श्रृंखला को देख रहे थे, तो हमने कहा कि उम्मीद है कि अंत में समापन होगा। खैर, विलाप में कभी समापन नहीं होता। हम उस सुखद बिंदु तक नहीं पहुँचते।

लेकिन एक मोड़ आता है, एक मोड़, और हमने उसका वर्णन किया है। दर्द पहले की तरह ही बुरा महसूस होता है, लेकिन एक अधिक सकारात्मक भविष्य की कल्पना की जा सकती है। और इसलिए बदलाव की दिशा में एक संकल्प है।

और यह पूरी तरह से वर्णन करता है कि अध्याय 3 के 22 और 23 में क्या हो रहा है, और यहाँ क्या हो रहा है। एक भजन है जो कुछ मायनों में काफी हद तक समान है। यह भजन 73 है।

और भजनकार बहुत विलाप कर रहा था, और उसके पास एक धार्मिक समस्या थी जो वास्तव में उसे दुखी कर रही थी। और यह एक ईश्वरीय समस्या भी थी, कि उसने अपने आस-पास दुष्ट लोगों को देखा, और वे जीवन में बहुत अच्छे से रह रहे थे, और वे स्वस्थ थे, और सब कुछ समृद्ध हो रहा था, और उनका पूरा अस्तित्व सफलता की प्रतिध्वनि कर रहा था। जबकि वह जितना अच्छा विश्वासी हो सकता था, उतना अच्छा था, लेकिन जीवन उसके लिए भयानक था, और वह बहुत बीमार था।

और वह ईश्वर की समस्या के बारे में सोचता है, और कहता है, यह कैसे हो सकता है? यह कैसे हो सकता है? और क्या मैं ऐसे ईश्वर पर विश्वास कर सकता हूँ? और वह कहता है, स्पष्ट रूप से, भजन की शुरुआत के करीब, जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे पैर लगभग फिसल चुके थे। मैं लगभग अपना पैर जमाना खो चुका था, क्योंकि जब मैंने दुष्टों की समृद्धि देखी तो मैंने अहंकारियों को समाप्त कर दिया। और वह कहता है, पूरे दिन, मैं पीड़ित रहा हूँ, और हर सुबह नई सज़ाएँ लेकर आती है।

और यह कैसे हो सकता है? यह उचित नहीं है। इसलिए, उसे इस पूरी स्थिति के बारे में शिकायत है। लेकिन फिर वह फिर से सोचता है, और यह श्लोक 15 से 17 में है।

वह एक निर्णायक मोड़ पर पहुँच जाता है, और यहाँ विलाप 3 के समानान्तर है। अगर मैंने ऐसा कहा होता, तो मैंने आपके बच्चों को धोखा दिया होता, और मैंने कहा होता, अच्छा, मैं अपना विश्वास खो रहा हूँ, और ओह प्रिय, वे चिंतित हो जाते, और ओह माय, शायद वे भी अपना विश्वास खोने के लिए लुभाए जाते। इसलिए, मैं उनकी खातिर इस रास्ते पर नहीं जा सकता। तो यह उनकी पहली प्रतिक्रिया है।

लेकिन जब मैंने यह सब समझने की कोशिश की, तो यह मुझे बहुत परेशान करने लगा। मैं अपनी अकेली समस्या के साथ रह गया था, और इसका समाधान कैसे हो सकता था? जब तक मैं भगवान के पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर गया और उनकी अंतिम नियति को नहीं समझ गया। वह एक उत्सव में गया था।

वह अभी भी सेवाओं में जा रहा था, और वह इस त्यौहार सेवा में गया, और संभवतः उसने गायक मंडली, रब्बीनिक गायक मंडली द्वारा गाए गए अद्भुत भजन सुने, जो ईश्वर की शक्ति के बारे में थे और कैसे अंततः ईश्वर की जीत होती है। और वह फिर से विश्वास करने लगा। वह फिर से विश्वास करने लगा।

उन्होंने कहा, मैंने भगवान के पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और तब मुझे उनकी अंतिम नियति समझ में आई। और इसलिए, वे कहते हैं, यहाँ चीजें बदलने जा रही हैं, और मैं विश्वास कर सकता हूँ कि भगवान बदलाव लाने जा रहे हैं, और मैं वर्तमान के इस भयावह भगवान के बजाय भविष्य के इस भगवान पर भरोसा कर सकता हूँ, जिसका मैं अनुभव कर रहा हूँ। और इसलिए यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

और विलाप में, जैसा कि मैंने कहा, यह जीवित रहने की बात थी। तथ्य यह है कि उसे लगा कि परमेश्वर उसे जीवित रख रहा है। परमेश्वर ने उसे युद्ध, आक्रमण, घेराबंदी और भुखमरी की सारी विपत्तियों में मरने नहीं दिया।

वह अभी भी हर सुबह जाग रहा था, और उसे जीवित रखने में भगवान का कोई उद्देश्य अवश्य होगा। सच है, उसका संकट जीवन से ज़्यादा कुछ नहीं था, लेकिन यह भगवान के निरंतर उपहार के रूप में कुछ सकारात्मक था। और उसने इसे एक तरह से समुद्र तल के रूप में देखा कि भगवान उसके भविष्य में क्या कर सकते हैं।

यह एक ऐसा उपहार था जो और भी बेहतर और मजबूत बन सकता था, एक ऐसा उपहार जो सकारात्मक और आशापूर्ण दिशा की ओर संकेत करता था, और यह इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर उसके जीवन में कार्य कर रहा था।

मैं आपको अपने पादरी कार्य में हुए एक अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ। मैं अस्पताल में नवजात शिशु इकाई के क्रिटिकल केयर सेक्शन का दौरा कर रहा था, और हर शुक्रवार को, मैं उसी समय से पहले जन्मे बच्चे को देखने जाता था क्योंकि माता-पिता ने पादरी से कहा था कि वह जाकर उससे मिले और उसके लिए प्रार्थना करें। इसलिए, माता-पिता की इच्छा के अनुसार, मैं समय से पहले जन्मे बच्चे से मिलने गया और उसके पालने के पास जोर से प्रार्थना की।

वह बहुत दयनीय लग रहा था, अपने अविकसित फेफड़ों की भरपाई के लिए उसे श्वसन यंत्र पर निर्भर रहना पड़ रहा था। वह बीमार स्वास्थ्य की तस्वीर था। ऐसा लगता था कि उसकी नर्स कभी भी छोटे जॉन की प्रगति या उसकी कमी के बारे में पूछने के लिए आसपास नहीं थी।

एक दिन, मैंने उसे अपने बच्चे की देखभाल करते हुए पाया और उससे पूछ पाया। पहले तो उसके पास कहने को कुछ नहीं था और फिर उसने बस इतना कहा, जहाँ जीवन है, वहाँ आशा है। उस समय मुझे लगा कि यह कोई बहुत बड़ा जवाब नहीं है, लेकिन बाद में, मैंने बच्चे के पास बैठकर अपनी प्रार्थनाओं में इसे शामिल कर लिया, ताकि मैं उससे चिपक सकूँ।

और यहाँ भी कुछ ऐसा ही है। जहाँ जीवन है, वहाँ आशा है। यह वह बिंदु है जहाँ गुरु पहुँचता है, न केवल अपने लिए, बल्कि यह मण्डली के लिए भी एक संदेश है जिसे ध्यान में रखना चाहिए।

हमने इन दो आयतों में देखा है कि दृष्टिकोण में बदलाव परमेश्वर के चरित्र पर आधारित है। यह न केवल पाप का दण्ड देने वाला है, बल्कि अंततः प्रेम और आशीर्वाद देने वाला भी है। ये परमेश्वर के स्वभाव के स्थायी भाग हैं।

वह निर्गमन 34 और पद 6 का हवाला देता है, जिसमें भयावह पृष्ठभूमि और परमेश्वर की ओर से आने वाला प्यारा, अनुग्रहपूर्ण वादा शामिल है। ये परमेश्वर और जिस तरह से परमेश्वर अपने लोगों के साथ व्यवहार करता है, उसके बारे में नई उम्मीदें पैदा करते हैं। और जैसा कि मैं कहता हूँ, यही वह है जो सलाहकार को करने की ज़रूरत थी।

पुरानी उम्मीदें ध्वस्त हो गई थीं। सिय्योन धर्मशास्त्र, वह स्थायी दिव्य राजवंश, ओह माय, हाँ, वह चला गया था। वादा किए गए देश में इज़राइल का आशीर्वाद, ओह माय, अब इसका बहुत कम सबूत है।

तो, क्या बचा था? और इस समय मण्डली के लिए, यह कुछ भी नहीं था। लेकिन गुरु मामले को आगे बढ़ा रहे हैं। हाँ, कुछ तो है।

हाँ, कुछ तो है। बस, मैं यहीं रुकूँगा नहीं, और हम अगली बार आगे बढ़ेंगे।

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 7 है, विलाप 3:17-23।